राजा के लिए एक उपहार

फ़ारसी कहानी

पुनर्कथन और चित्र
क्रिस्टोफर मैनसन



A Gift for the King

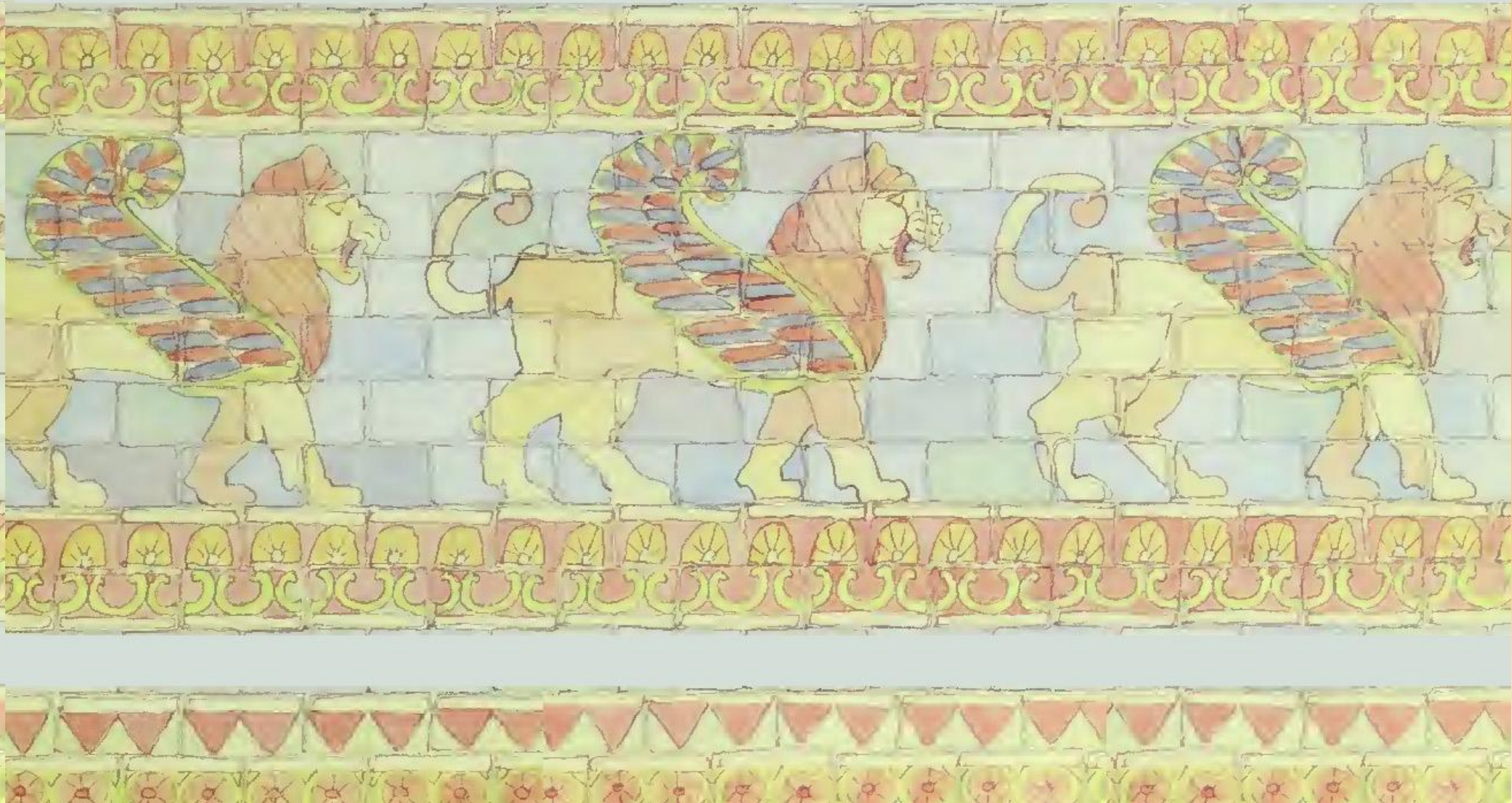
राजा के लिए एक उपहार



A Gift for the King

फ़ारसी कहानी

पुनर्कथन और चित्र: क्रिस्टोफर मैनसन



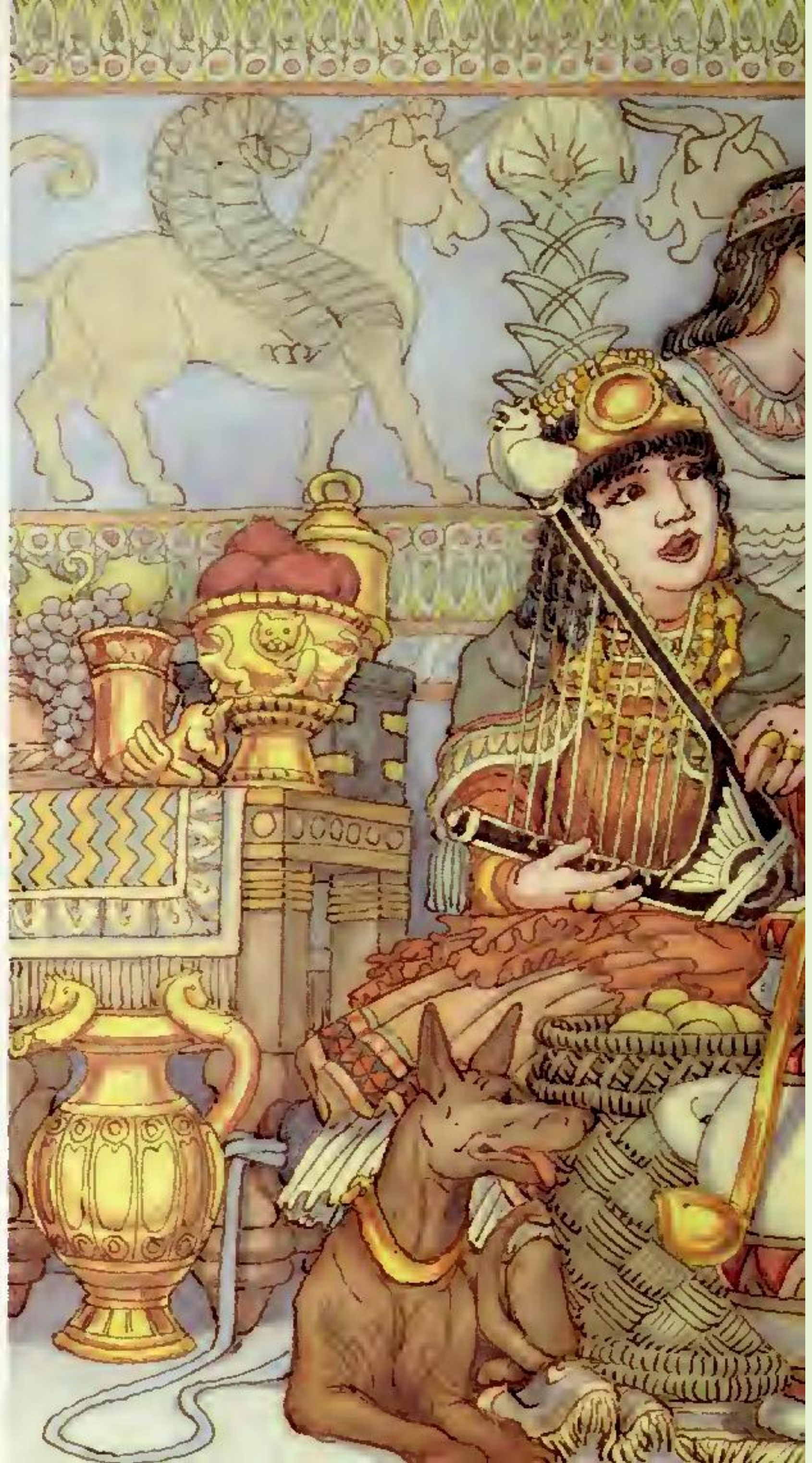
Once there was a king named Artaxerxes who ruled a great empire.

He was very rich. He had many servants and brave soldiers who obeyed his every order. He lived in a marvelous colored palace filled with beautiful things.

It was a law of the land that all who came to visit the king were required to bring him a gift. Over the years the king had received many wonderful presents. Every day people from all the different lands of the empire brought King Artaxerxes beautiful and costly things.

The king's treasury was full of gold and silver. The king's palace was full of objects made of ivory and precious stones, furniture made of cedar and ebony wood, gorgeous clothes, golden cups and alabaster bowls.

But the day came when the king took no pleasure in all this.



एक बार एक राजा था जिसका नाम आर्टैक्सरेक्स था. वो एक बड़े साम्राज्य पर शासन करता था.

राजा बहुत अमीर था. उसके पास कई नौकर और बहादुर सैनिक थे जो उसके हर आदेश का पालन करते थे. वह खूबसूरत चीज़ों से भरे एक शानदार रंगीन महल में रहता था.

उस देश में एक नियम था कि जो कोई भी राजा से मिलने आता, उसे राजा के लिए एक उपहार जरूर लाना होता था. सालों से राजा को ढेरों शानदार उपहार मिले थे. हर दिन साम्राज्य के अलग-अलग देशों से लोग, राजा आर्टैक्सरेक्स के लिए खूबसूरत और महंगी चीज़ें लाते थे.

राजा का खजाना सोने और चाँदी से भरा था. राजा का महल हाथीदांत और कीमती पत्थरों से बनी वस्तुओं, देवदार और आबनूस की लकड़ी से बने फर्नीचर, भव्य कपड़े, सुनहरे कप और अलबास्टर के कटोरों से भरा था.

लेकिन एक दिन ऐसा आया जब राजा को इन सब उपहारों से खुशी मिलनी बंद हो गई.



So King Artaxerxes jumped up and, without a word, went walking, not knowing where he was going.

He walked through his beautiful colored palace, through the carved and painted halls and shining courtyards, and out the door.

The king had never walked anywhere before. He was always carried by his servants or driven along in one of his gilded chariots. Everyone was astonished.

The king's attendants hurried after him, wondering where he was going.

उसके बाद राजा आर्टैक्सरेक्स अपने सिंहासन से उठा और फिर बिना कुछ कहे, चल पड़ा. उसे यह नहीं पता था कि वो कहाँ जा रहा था.

वह अपने सुंदर रंगीन महल से, नक्काशीदार और रंगीन हॉल और चमकते हुए आंगनों से होकर, मुख्य दरवाजे से बाहर निकल गया.

राजा इस तरह पहले कभी पैदल नहीं चला था. हमेशा उसके सेवक ही उसे लेकर जाते थे या फिर उसे सोने के रथों में ले जाया जाता था. हर कोई राजा के चलने पर हैरान था.

राजा के सेवक उसके पीछे भागे. वो सोच नहीं पा रहे थे कि उनका राजा कहाँ जाएगा.





Outside the palace King Artaxerxes met two merchants. They said, "O great king! May you live a hundred years! We have gifts for you—rare incense and sweet perfumes from all over the world!" And they showed the king what they had brought to him. Each jar contained a rich, rare and costly scent.

The king shrugged his shoulders and said to his attendants, "When we return, put the perfumes and incense with all the rest of my perfumes and incense."

Then he walked on.

महल के बाहर राजा आर्टैक्सरेक्स को दो व्यापारी मिले. उन्होंने कहा, "हे महान राजा! आप सौ साल तक जीवित रहें! हमारे पास आपके लिए उपहार हैं—दुनिया भर की दुर्लभ धूप और सुगंधित अगरबत्तियां!" फिर उन्होंने राजा को दिखाया कि वे उसके लिए क्या-क्या लाए थे. प्रत्येक जार में कोई खुशबूदार, दुर्लभ और महंगी सुगंध थी.

राजा ने अपने कंधे उचकाए और अपने सेवकों से कहा, "जब हम वापस पहुँचें, तो मेरे बाकी सभी इत्र और धूप के साथ इन इत्र और धूप को भी रख देना."

फिर राजा आगे बढ़ गया.





Beyond the palace gardens King Artaxerxes met a nobleman who ordered his servants to display beautiful robes as the king walked by.

"O great king!" said the nobleman. "May you live a thousand years! I have brought you robes of fine wool and silk woven through with gold and silver threads. Please accept this gift from your most loyal subject."

The king signaled his attendants to take up the present and said with a sigh, "When we return to the palace, put these robes with all my other robes."

Then he walked on.

राजा आर्टैक्सरेक्स ने महल के बगीचों से परे एक रईस से मुलाकात की, जिसने अपने सेवकों को आदेश दिया कि जब राजा वहाँ से गुजरे तो वे उसे सुंदर, बेशकीमती वस्त्र दिखाएँ.

"हे महान राजा!" रईस ने कहा. "आप हज़ार साल तक जिएँ! मैं आपके लिए सोने और चाँदी के धागों से बुने हुए बढ़िया ऊन और रेशम के वस्त्र लाया हूँ. कृपया अपने सबसे वफ़ादार सेवक का यह उपहार स्वीकार करें"

राजा ने अपने सेवकों को उपहार लेने का संकेत दिया और आह भरते हुए कहा, "जब हम महल में वापस पहुंचें, तो इन वस्त्रों को मेरे बाकी अन्य कपड़ों के साथ रख देना."

फिर राजा आगे बढ़ा.





Coming down from the hills, King Artaxerxes met one of his generals marching along with an army of brave soldiers.

The general had his trumpeters sound a salute to the king. Then he said, "O great king! May you live ten thousand years! It is my great honor to present you with this golden bow, this golden quiver full of golden arrows and this great golden shield. May these presents serve you and protect you always!"

The king waved his staff and said to his attendants, "Bring these things along, and when we return to the palace, put them in the armory with all my other arms."

Then he walked on.

पहाड़ियों से उतरते हुए, राजा आर्टैक्सरेक्स ने अपने एक सेनापति से मुलाकात हुई, जो बहादुर सैनिकों की एक सेना का नेतृत्व कर रहा था.

सेनापति ने अपने तुरही बजाने वालों से राजा को सलामी दिलवाई. फिर उसने कहा, "हे महान राजा! आप दस हज़ार साल जिएँ! आपको यह सुनहरा धनुष, सुनहरे तीरों से भरा यह सुनहरा तरकश और यह शानदार सुनहरी ढाल भेंट करना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है. ये अस्त्र हमेशा आपकी रक्षा करेंगे!"

राजा ने अपनी शाही छड़ी लहराई और अपने सेवकों से कहा, "ये चीज़ें अपने साथ ले चलो, और जब हम महल में वापस पहुंचें, तो मेरे सभी अन्य हथियारों के साथ इन्हें भी शस्त्रागार में रख देना."

फिर राजा आगे बढ़ गया.








Out on the plains King Artaxerxes walked by the tower where the royal stargazers lived. They happened to look down, and when they saw the king, they ran out of their tower to meet him.

"O great king!" they said. "May you live a hundred thousand years! We have made a statue in your likeness that will show your strength and majesty for all time! We hope this present pleases you."

The king looked over the statue glittering with silver and colored stones and said to his attendants, "When we return to the palace, put the statue in the room with all my other statues."

Then he walked on.

मैदान में राजा आर्टैक्सरेक्स उस मीनार के पास से गुज़रे जहाँ शाही तारामंडल देखने वाले रहते थे. उन्होंने नीचे देखा, और जब उन्होंने राजा को देखा, तो वे उनसे मिलने के लिए अपनी मीनार से बाहर भागे.

"हे महान राजा!" उन्होंने कहा. "आप एक लाख साल जिएँ! हमने आपके ही रूप की एक मूर्ति बनाई है जो हमेशा के लिए आपकी ताकत और महिमा को दर्शाएगी! हमें उम्मीद है कि आपको हमारा उपहार पसंद आएगा."

राजा ने चांदी और रंगीन पत्थरों से चमकती मूर्ति को देखा और अपने सेवकों से कहा, "जब हम महल में लौटें, तो इस मूर्ति को भी मेरी अन्य मूर्तियों वाले कमरे में रख देना."

फिर राजा आगे बढ़ गया.

In the desert King Artaxerxes met a caravan of traders from distant lands who threw themselves down before him and said, "O great king! May you live a million years! We have traveled for many weeks to bring you these strong camels loaded with rugs woven of the finest, softest wool to be found anywhere! We hope you will enjoy our gift."

The king said to his attendants, "When we return, put the camels in my stables with all my other camels and throw the rugs on the floor."

Then he walked on.

रेगिस्तान में राजा आर्टैक्सरेक्स दूर-दूराज से आए व्यापारियों के एक कारवां से मिले. व्यापारी राजा के सामने झुके और उन्होंने कहा, "हे महान राजा! आप लाखों साल जिएँ! हमने आपके लिए यह मजबूत ऊँट लाने के लिए कई हफ्तों तक यात्रा की है. यह ऊंट सबसे बेहतरीन, दुर्लभ, सबसे मुलायम ऊन से बुने हुए कालीनों से लदे हैं! हमें उम्मीद है कि आप हमारे उपहारों को स्वीकार करेंगे." राजा ने अपने सेवकों से कहा, "जब हम वापस लौटें, तो मेरे सभी अन्य ऊँटों के साथ इन ऊँटों को भी मेरे अस्तबल में रख देना और कालीनों को फर्श पर बिछा देना."

फिर राजा आगे बढ़ गया.





Finally King Artaxerxes met ambassadors from a neighboring kingdom bringing many rich presents as tribute.

"O great king!" said one ambassador. "May you live *forever*! See what we have brought you: a chariot with swift little horses; three singing ladies who will sing songs about your greatness; bronze vessels full of gold and silver; golden bowls; vases and cups of alabaster; pearls and gems; and caskets of jewels, bracelets, earrings and necklaces! Our only hope is that you will find these things pleasing!"

The king looked wearily at all the gifts and told his attendants, "When we return, put all these gifts with all my other gifts in the palace."

Then the king sat down to rest.

अंत में, राजा आर्टैक्सरेक्स ने पड़ोसी राज्य से आए राजदूतों से भेंट की, जो तोहफे बतौर राजा के लिए कई समृद्ध उपहार लेकर आए थे. "हे महान राजा!" एक राजदूत ने कहा. "आप अमर रहें! देखें कि हम आपके लिए क्या लाए हैं: तेज़ छोटे घोड़ों वाला एक रथ; तीन गायिकाएँ जो आपकी महानता के सदा गीत गाएँगी; सोने और चाँदी से भरे काँसे के बर्तन; सोने के कटोरे; अलबास्टर के फूलदान और प्याले; मोती और रत्न; हीरे-जवाहरात, कंगन, झुमके और हार के बक्से! हमारी एकमात्र आशा यह है कि आप ये उपहार स्वीकार करें!"

राजा ने थके हुए भाव से सभी उपहारों को देखा और अपने सेवकों से कहा, "जब हम वापस लौटें, तो इन सभी उपहारों को मेरे अन्य बहुमूल्य रत्नों के साथ महल में रख देना."

उसके बाद राजा कुछ देर आराम करने के लिए बैठ गए.








For some reason King Artaxerxes took no pleasure in all his presents.

His faithful attendant said, "O great king! You are surely the richest king who has ever lived. Your treasuries are heaped high with gold and silver; your palace is enriched with every precious gift to be found in the world. Just look at these jewels shining in the sun! What more could you want?"

"I have never walked so far before. My throat is dry as a desert stone!" The king thought for a moment and said, "I want a cool drink."

किसी कारण से राजा आर्टैक्सरेक्स को अपने इन सभी उपहारों से कोई खुशी महसूस नहीं हुई. राजा के वफादार सेवकों ने कहा, "हे महान राजा! आप निश्चित रूप से अब तक के सबसे अमीर राजा हैं. आपके खजाने सोने और चांदी से भरे हुए हैं; आपका महल दुनिया में पाए जाने वाले हर कीमती उपहार से समृद्ध है. ज़रा इन रत्नों को धूप में चमकते हुए देखें! आपको भला और क्या चाहिए?"

"मैं पहले कभी इतनी दूर नहीं चला हूँ. मेरा गला रेगिस्तान के एक पत्थर की तरह सूख गया है!"

राजा ने एक पल सोचा और कहा, "मुझे कुछ ठंडा पीने को दो."

Of course, anything the king said had the force of law, and anything the king wanted, he must have.

So everyone looked through all the wonderful gifts to find something for the king to drink.

They searched the baskets and caskets, the bags and the bundles. They looked in the vases and vessels, the jugs and the jars. In desperation they even looked over the camels and the carpets and the coins and the coffers.

But there was nothing for the king to drink.

बेशक, राजा ने जो कुछ भी कहा, वो कानून था. राजा जो कुछ भी चाहता, वो उसे ज़रूर मिलना ही था.

इसलिए, सभी सेवकों ने राजा के पीने के लिए सभी अद्भुत उपहारों को देखा और उनमें खोजबीन की.

उन्होंने टोकरियाँ और डिब्बे, थैले और बंडल खोजे. उन्होंने फूलदान और बर्तन, सुराही और जारों में झाँका. हताशा में सेवकों ने ऊँटों और कालीनों और सिक्कों और तिजोरियों में भी झांककर देखा.

लेकिन उन्हें राजा के पीने के लिए कुछ भी नहीं मिला.









"Where is my drink?" demanded the king.

His attendants threw themselves down in the dust before him.

"O great king!" they said. "There is nothing to drink! The bottles are filled with perfume, and the cups are filled with pearls."

"By the great shining sun!" cried the angry king. "I have never been so thirsty before!"

Just then a poor shepherd boy happened to come along, and he said, "O great king, I am only a poor shepherd. If we were back in the hills where I live, I would give you my fattest sheep and the sweetest milk of my flock. But here I have only this old water jar. I hope you are not displeased."

"मेरा पेय कहाँ है?" राजा ने पूछा.

सेवकों ने राजा के सामने खुद को धूल में गिरा दिया.

"हे महान राजा!" उन्होंने कहा. "यहाँ पर पीने के लिए कुछ भी नहीं है! बोतलें इत्र से भरी हुई हैं, और प्याले मोतियों से भरे हुए हैं."

"महान चमकते सूरज की कसम!" राजा गुस्से में चिल्लाए, "मैं पहले कभी इतनी प्यास नहीं लगी थी!"

तभी एक गरीब चरवाहा लड़का वहाँ से गुजरा, और उसने कहा, "हे महान राजा, मैं केवल एक गरीब चरवाहा हूँ. अगर हम ऊंची पहाड़ियों पर होते जहाँ मैं रहता हूँ, तो मैं आपको अपनी सबसे मोटी भेड़ और अपने झुंड का सबसे मीठा दूध भेंट करता. लेकिन यहाँ मेरे पास केवल यह पुरानी पानी की सुराही है. मुझे उम्मीद है कि आप नाराज़ नहीं होंगे."

King Artaxerxes lifted up the old jar, which was cool to the touch. The sound of water splashing inside was the sweetest music he had ever heard.

He poured some water into a bowl, where it glistened and glittered like a heap of diamonds.

He lifted the bowl of precious liquid to his lips and took a deep, deep drink.

The king had never tasted anything so good.

राजा आर्टैक्सरेक्स ने पुरानी सुराही उठाई, जो छूने में ठंडी थी. जब उन्होंने पानी को प्याले में उंडेला तो वो आवाज़ सबसे मधुर संगीत था जो राजा ने पहले कभी सुना था.

उन्होंने एक कटोरे में थोड़ा पानी डाला. पानी की हर बूँद हीरे की तरह चमक रही थी.

राजा ने कीमती तरल के कटोरे को अपने होठों तक उठाया और फिर पानी एक गहरी घूंट पी.

राजा ने इतना अच्छा पानी पहले कभी नहीं पिया था.





The jar of water pleased the king more than any gift he had been given all that day.

He was so pleased that he gave the horses, the chariot and the camels to the ambassador and told him to ride home with the singing ladies.

Then the king turned to the boy and said, "Because your gift has pleased me so much, I give you all these gifts in exchange."

And so it was done.

पानी की सुराही, राजा को उस दिन दिए गए किसी भी उपहार से ज़्यादा पसंद आई.

राजा इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने घोड़े, रथ और ऊँट राजदूत को दे दिए और उसे गाने वाली महिलाओं के साथ घर जाने को कहा.

फिर राजा ने लड़के की ओर मुड़कर कहा, "क्योंकि तुम्हारे उपहार ने मुझे बहुत प्रसन्न किया है, इसलिए मैं तुम्हें ये सभी उपहार पानी की सुराही के बदले में देता हूँ."

और ऐसा ही हुआ.









Then great King Artaxerxes, ruler of a rich and powerful empire, walked happily home, carrying his favorite gift.

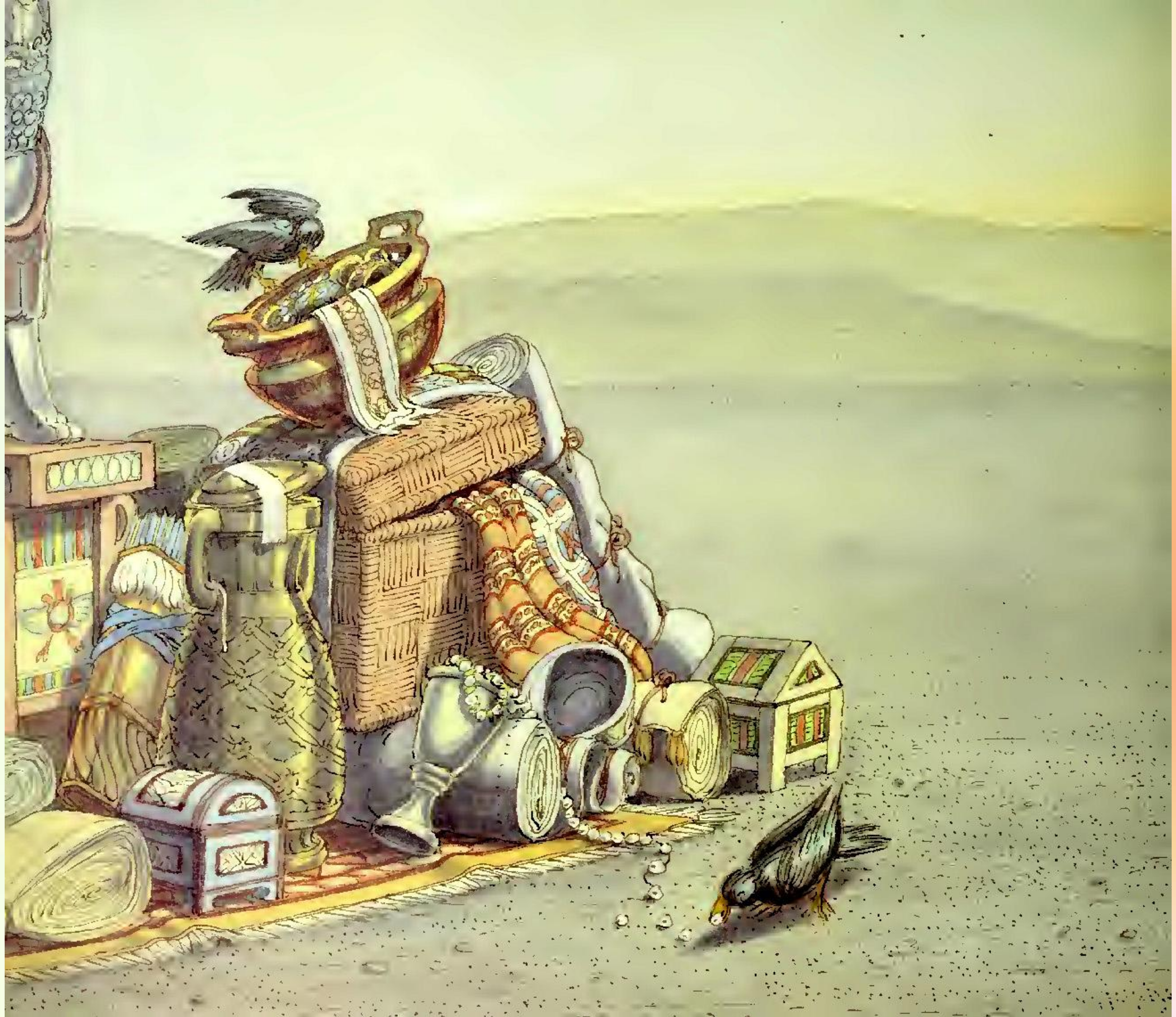
When the king arrived at his palace, he was so happy, no one knew what had happened. They all thought the old jar must be full of something unbelievably precious.

And, of course, they were right.

फिर एक समृद्ध और शक्तिशाली साम्राज्य के शासक महान राजा आर्टैक्सरेक्स अपने पसंदीदा उपहार को लेकर खुशी-खुशी घर वापिस लौटे.

जब राजा अपने महल में पहुंचे, वो वो इतने खुश थे कि किसी को यह समझ में ही नहीं आया कि उन्हें क्या हुआ था. सभी लोगों ने सोचा कि वो पुरानी सुराही किसी अविश्वसनीय रूप से कीमती चीज़ से भरी होगी.

और, ज़ाहिर है, वे सही थे.





A Note About the Book

This story is based on a tale from *The Palace of Pleasure*, a collection by William Painter published in 1566. Painter found the tale in the works of a third-century Roman writer named Aelian.

Artaxerxes was the king of Persia from 464 to 424 B.C.; he ruled an empire that stretched from Greece to India. Many countries paid tribute to the empire, and the Persians became known for their fabulous wealth and luxurious living. It is recorded that when Alexander the Great finally captured Persepolis, the chief city of Persia, in 330 B.C., it took three thousand camels and innumerable mules to carry away the treasure.

The kings of Persia were absolute monarchs. Everyone was required to obey their orders, and their word was law. They never walked outside their palaces, but were carried everywhere. They maintained lavish courts and entertained thousands of guests every day.

The Persians employed artists and craftsmen from many lands to build and decorate their exquisite palaces. The art of Babylonia, Assyria, Greece, and Egypt influenced the art of Persia.

The wealth and glory of the Persian kings are long gone, but the stately processions of guards and tribute bearers carved on their palace walls still march up flights of crumbling stairs to empty throne rooms. I have used these carvings, as well as historical reconstructions of costumes, furniture, and buildings, as sources for my pictures.

C.M.

पुस्तक के बारे में एक नोट

यह कहानी 1566 में प्रकाशित विलियम पेंटर के संग्रह "द पैलेस ऑफ़ प्लेज़र" की एक कहानी पर आधारित है. पेंटर को यह कहानी तीसरी सदी के रोमन लेखक एलियन की रचनाओं में मिली थी.

आर्टैक्सरेक्स 464 से 424 ईसा पूर्व तक फारस के राजा थे; उन्होंने ग्रीस से लेकर भारत तक फैले एक साम्राज्य पर शासन किया. कई देशों ने साम्राज्य को श्रद्धांजलि दी, और फारसियों को उनके शानदार धन और शानदार जीवन के लिए जाना जाता था. यह दर्ज है कि जब सिकंदर महान ने आखिरकार 330 ईसा पूर्व में फारस के मुख्य शहर पर्सेपोलिस पर कब्जा किया, तो उसे खजाने को ले जाने के लिए तीन हज़ार ऊँट और असंख्य खच्चरों की ज़रूरत पड़ी.

फारस के राजा निरंकुश सम्राट थे. हर किसी को उनके आदेशों का पालन करना आवश्यक था, और उनका वचन कानून था. वे कभी भी अपने महल से बाहर नहीं निकलते थे, बल्कि उन्हें हर जगह लेकर जाया जाता था. वे अपने भव्य दरबार में हर दिन हज़ारों मेहमानों का मनोरंजन करते थे.

फ़ारसी लोगों ने अपने शानदार महलों को बनाने और सजाने के लिए कई देशों से कलाकारों और शिल्पकारों को बुलाकर काम पर रखा था. बेबीलोनिया, असीरिया, ग्रीस और मिस्र की कला ने फारस की कला को प्रभावित किया.

फ़ारसी राजाओं की दौलत और वैभव बहुत पहले ही खत्म हो चुका है, लेकिन उनके महल की दीवारों पर उकेरे गए रक्षकों और श्रद्धांजलि देने वालों के आलीशान जुलूस अभी भी ढहती सीढ़ियों से खाली सिंहासन कक्षों तक जाते हैं. मैंने इन नक्काशी के साथ-साथ वेशभूषा, फर्नीचर और इमारतों के ऐतिहासिक पुनर्निर्माण को अपने चित्रों के स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया है.

